ओ३म्-कार उपासना

क) वैदिक स्वरूप : **1) ओमासश्चर्षणीधृतः॰** ऋग्वेद 1.3.7

2) ओ३म् प्रतिष्ठ। यजुर्वेद 2.13

3) **ओ३म् क्रतो स्मर॰** यजुर्वेद 40.15

ख) ओ३म्-कार शब्द की परिभाषा, निर्वचन और उच्चारण प्रकार

परिभाषा : ओ३म् = **अवति इति ओ३म्** (जो रक्षा करता है वह ओम् नाम से वाच्य परमेश्वर है।)

1) अव रक्षण-गति-कान्ति-प्रीति-तृप्त्यवगम-प्रवेश-श्रवण-स्वाम्यर्थ-याचन-क्रियेच्छा-दीप्त्यवाप्त्याऽऽलिङ्न-हिंसा-दान-भाग-वृद्धिषु। (धातुपाठ 1.196 अवति)

2) **समीकरण** : अव+मन्

अव्+म् (**अवतेष्टिलोपश्च।** उणादि कोष, सूत्रसंख्या 142)

अव्>अ+[ऊठ्]+म् (अव् धातु के उपधा 'व्' कार को ऊठ आदेश होता है। **ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च।** अष्टाध्यायी 6.4.20)

अ+ऊ+म्

ओम्+सु (सार्वधातुक गुण, हल्ङ्यादिलोपः)

ओम्

3) **उच्चारण प्रक्रिया** : **ओ३म्** (प्लुत उदात्त, अर्थात्, प्लुततर उच्चारण होना चाहिए)

समीकरण

1) (क) **वाक्यस्य टेः प्लुतः उदात्तः।** अष्टाध्यायी 8.2.82

(ख) **प्रत्यभिवादेऽशूद्रे।** अष्टाध्यायी 8.2.83

उदाहरण : भो३

2) **दूराद्धूते च।** अष्टाध्यायी 8.2.84

उदाहरण : देवदत्त३

3) ओमभ्यादाने। अष्टाध्यायी 8.2.87

अभ्यादाने = आरम्भे :

उदाहरण : 1) **ओ३म्** अग्निमीळे पुरोहितम्...।

2) ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत (छान्दोग्योपनिषत् 1.1.1)

4) **प्रणवष्टेः।** अष्टाध्यायी 8.2.89

अर्थ : ये यज्ञकर्मणि (अष्टाध्यायी 8.2.88) की अनुवृत्ति के अनुसार 'प्रणवष्टेः' सूत्र का अर्थ होगा–

यज्ञकर्म में अंतिम 'टि', यानी स्वरवर्ण को प्रणव, अर्थात्, 'ओ३म्'कार का आदेश होता है जो 'ओ३म्'-कार पहले से ही प्लुत उदात्त आदेश को प्राप्त हो चुका है।

निष्कर्ष : सर्वदा ओ३म्-कार की 'टि' को, अर्थात्, स्वरवर्ण को प्लुत उदात्त (प्लुततर) करके उच्चारण करें।

ग) 'ओ३म्'-कार की प्रशस्तियां और व्यावहारिक जीवन में प्रयोग

1. **ब्रह्मणः प्रणवं कुर्यादादावन्ते च सर्वदा।**
   स्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं पुरस्ताच्च विशीर्यति। मनुस्मृति 2.74

2. **ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा।**
   संहत्य हस्तावध्येयं स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः। मनुस्मृति 2.71

घ) 'ओ३म्'-कार के विविध अर्थ

1) नमन, 2) अभिवादन, 3) हे, भो आदि संबोधन, 4) हाँ, 5) अवश्य, 6) हे परमपिता! आदि

यौगिक अर्थ : **अ** = विराट्, अग्नि, विश्व। **उ** = हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस। **म** = ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ। (महर्षि दयानंद)

ङ) 'ओ३म्'-कार का यौगिक प्रयोग

1. **सर्वे देवा यत् पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।**
   यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योम्। इति एतत्। कठोपनिषत् 2.15
2. **तस्यवाचकः प्रणवः।**
   तज्जपस्तदर्थभावनम्।
   ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाऽभावश्च। (योग दर्शन 1.27-29)
3. **ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः।** (योग दर्शन 2.11)

च) वैदिक ध्यानपद्धति

ओ३म्

1. हे सर्वव्यापक परमेश्वर!
2. हे सर्वज्ञ परमेश्वर!
3. हे सर्वरक्षक! न्यायकारी! निर्विकार! और आनंदस्वरूप परमेश्वर!

इस प्रकार जप उपासना आदि कर्म करते हुए हम शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करें। **ओ३म्।।**